आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 2/जून 2025
Received: 13/05/2025; Accepted: 20/06/2025; Published: 28/06/2025

आधुनिक समाज के डिजिटल युग में आदर्श पिता का योगदान

- सौम्यश्री हेच.डी.
सहायक प्रोफ़ेसर
सुराणा कालेज, (स्वायत्त) साउथेंड सर्कल ,बेंगलूरु.
मोबाईल नंबर:-9019807491
ईमेल :-sowmyashree.hd@suranacollege.edu.in

सौम्यश्री हेच.डी., आधुनिक समाज के डिजिटल युग में आदर्श पिता का योगदान, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025**,(88-91) https://doi.org/10.5281/zenodo.15767789

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

पिता — यह शब्द ही अपने आप में एक संबल, एक छाया, और एक मजबूत आधार की अनुभूति कराता है। अक्सर हम माँ के प्रेम और ममता के बारे में बहुत कुछ कहते-सुनते हैं, लेकिन पिता का स्नेह उस विशाल वटवृक्ष के समान होता है, जिसकी छाया तो सबको मिलती है, पर उसकी उपस्थिति का महत्व तब समझ आता है जब वह ओझल हो जाए।

पिता:- संबल और प्रेरणा

पिता अब बच्चों के जीवन में ज्यादा शामिल हैं – कहानियाँ सुनाते हैं , बच्चों के दोस्त बनते हैं , क्रिकेट खेलते हैं , सोने से पहले बच्चों को कहानियाँ भी सुनाते हैं , प्यार की थपकी देकर मीठी लोरी भी सुना रहे हैं , लेकिन फिर भी कई बार पिता या तो ज्यादा सख्त हो जाते हैं या बहुत दूर । जरुरत है कि वे बीज का रास्ता चुनेण , जहाँ वे मार्गदर्शक भी हों और साथी भी । अब बच्चे भावनात्मक रुप से संवेदनशील हैं । वे डर से नहीं , समझ से बढ़ते हैं। आज जा बच्चा सूचनाओं से घिरा है , इंटरनेट की आभासी दुनिया में उसके लिए भटकाव भी है। ऐसे मे

वास्तविक जीवन के अनुभवों से परिचित कराना पिता की जिम्मेदारी है। पिता को चाहिए कि अपने अनुभव , संघर्ष और जीवन की छोटी – बड़ी सच्चाइयाँ बच्चों से साझा करें । यही वह सेतु है , जो दो पीढ़ियों को जोड़ता है।

आज के संदर्भ में

आज जब आधुनिक जीवनशैली में परिवारों का स्वरूप बदल रहा है, पिता और बच्चों के बीच संवाद कम हो रहा है, तब और अधिक आवश्यक है कि हम उनके स्नेह को समझें और उनके योगदान को मान्यता दें। पिता भी संवेदनशील होते हैं — उन्हें भी सराहना, अपनापन और भावनात्मक जुड़ाव चाहिए होता है। कुछ दशक में पिता की भूमिका बदलती है , वे अब दोस्त है , मेंटर हैं.... हिन्दी के कहानिकार ज्ञानरंजन अपनी कहानी ' पिता ' में लिखते हैं – ' चौक से आते वक्त चार आने कीजगह तीन आने और तीन आने में तैयार होने , दो आने में चलने वाले रिक्शे के लिए पिता घंटे – घंटे खड़ेरहेंगे । धीरे – धीरे सबके लिए सुविधाएँ जुटाते रहेंगे , लेकिन खुद उसमें नहीं या कम से कम शामिल होंगे।' पिता यह शब्द सुनते ही मन में कई छवियाँ बनती हैं । कभी सख्त अनुशासन , कभी मजबूत सहारा, तो कभी एक चुपचाप पीछे खड़े रहने वाला शख्स । एक ऐसा शख्स, जो हमेशा परिवार के सुख को आगे रखता है , परिवार की जरुरत के सामने अपनी इच्छा मरता है म मेहनत करता है , सबको संभालता है ।

घर से बाहर काम में व्यस्त रहता है , इसलिए बहुत घुल – मिल नहीं पाता । लेकिन क्या आज का पिता वही है, जो सौ साल पहले था ? क्या उसकी भूमिका समय के साथ बदल नहीं रही ? और अगर बदल रही है ,तो यह बदलाव कैसा है ? हम पिता – पुत्र / पुत्री के संबंधों को समझने की कोशिश हमारे पुरखों के अनुभव के आधार पर कर सकते हैं ।

सुपर डैड का सफ़र : स्नेह के रुप में

समय के साथ पिता बदल रहे है । विश्वभर के माता – पिता को यह याद दिलाना कि जब पिता जीवन के शुरुआती बर्षों में बच्चों की परवरिश में भाग लेते हैं , तो उनके बच्चे बेहतर सीखते हैं , उनकी व्यावहारिक दिक्कतें कम होती हैं और वे स्वास्थ – खुश इंसान के रुप में बड़े होते हैं । आज पिता बच्चों को उनका सपना देखने और उसे साकार करते नजर आते हैं । बेटियों के साथ भी उनकी यही बाँन्डिग है । उदाहरण के लिए टेनिस स्टार सानिया मिर्जा – यह दिखाता है कि आज का पिता सिर्फ सुरक्षा देनेवाला नहीं बल्कि सपनों को उड़ान देने वाला भी बन सकता है । ऐसे कई उदाहरण हमारे बीच हैं जो पिता की एक नई तस्वीर हमारे सामने पेश करते हैं । यह बदलाव एकदम से भी नहीं हुआ । लगता है जैसे समय और रिश्तों के बीच की बाँन्डिग के बीच पिता क यह रुप बदले पिता की इमेज में हमारे सामने है ।

अब दुनियाभर के पिता बदले हैं और बच्चों की परवरिश में माँ जितनी ही भागीदारी निभा रहे हैं। प्रेग्रेंसी में पत्नी की देखभाल हो या शिशु के लिए पेटरनिटी लीव लेकर उसे संभालने में मदद करना , पिता

वो सब कर रहे हैं , तो यही तय था कि माँ कँरियर को बीच में छोड़ेगी , लेकिन अब इन खांवों को खुद पिता तोड़ रहे हैं। एक अध्ययन के मुताबिक दुनियाभर में ५ साल से कम उम्र के बच्चे को संभालने के लिए ३८% पिता फुल टाइम जाँब या वर्क फ्राँम होम करने लगते हैं और इस तरह वे प्राथमिक देखभालकर्ता बन रहे हैं। छोटे बच्चों के लिए पिता बेबी सिटिंग कर रहे हैं और नौकरी से भी सामंजस्य बैठा रहे हैं।

पिता के स्नेह में है आनन्द :-

पिता संतान के सर्वांगीण विकास में प्रत्यक्ष रुप में सकारात्मक भूमिका निभाता है । इसके लिए पिता की भूमिका त्याग , तपस्या , कर्मशीलता , दया , सहिष्णुता , कठोरता , कोमलता आदि भावों से ओतप्रोत होती है।

"मुखिया मुख सो चाहिए, खान – पान को एक।

पाले पौसे सकल अंग तुलसी सहित विवेक ॥"

पिता परिवार का मुखिया होता है। पिता परिवार के सभी सदस्यों को एक सूत्र में चाहे सुख हो अथवा दु:ख,सभी सदस्य यदि साथ हैं , तो वहाँ का वातावरण सुखमय ही रहता है। विवेकशील मुखिया परिवार को उसी प्रकार पोषित व पल्लवित करके संगठित रखता है , जिस प्रकार मुख के माध्यम से खाया गया अन्न समस्त शरीर के अंगों को पोषित करके स्वस्थ रखता है।

चरित्रवान, धर्मशील ईमानदार मुखिया से शासित परिवार समाज में सदैव आदर्श रुप में गौरव प्राप्त करती है। पिता वै जायते पुत्र : पिता ही पुत्र रुप में उत्पन्न होता है। पुत्र में व्यक्ति अपने स्वरुप को देखता है। यही उसके सुख का मूल भी बनता है। पिता का अर्थ है – पालन करने वाला , रक्षा करने वाला। पुत्र के समान पुत्री भी पिता का ही अंश है , किन्तु पुत्री में जो अंश पिता का आता हैं , वह अंश पति में कन्यादान के समय स्थापित कर दिया जाता है। इसीलिए शास्त्रों के अनुसार पुत्री का पुत्र भी श्राद्धकर्म के लिए योग्य माना गया है।

पिता: प्रेरणा, नायक और मार्गदर्शक

आज जब युवा पीढ़ी तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही है, तब भी पिता का अनुभव और मार्गदर्शन एक मजबूत नींव की तरह काम करता है। चाहे करियर चुनने की बात हो या रिश्तों में संतुलन की, पिता का नजरिया बच्चों को दिशा देता है। अक्सर देखा गया है कि आज के पिता अपने बच्चों की असफलताओं को भी गले

लगाना सीख गए हैं। वे उन्हें 'जीत' की नहीं, 'सीख' की संस्कृति दे रहे हैं। यही तो है सच्चा स्नेह — बिना शर्त, बिना अपेक्षा।

मानसिक स्वास्थ्य और पिता का भावनात्मक पक्ष

वर्तमान समय में मानसिक स्वास्थ्य एक अहम मुद्दा बन चुका है। पिता, जो वर्षों तक "मजबूत" बने रहने की सामाजिक अपेक्षा में अपने दर्द को छिपाते रहे, अब खुलकर भावनाएँ व्यक्त करने लगे हैं। यह बदलाव बच्चों को यह सिखाता है कि भावनाओं को दबाना नहीं, बल्कि साझा करना ज़रूरी है।

निष्कर्ष :-

आज के युग में, जहाँ रिश्तों को समय और ध्यान की सबसे अधिक आवश्यकता है, वहाँ एक पिता का मौन स्नेह जीवन को स्थिरता और आत्मविश्वास देता है। वह अब केवल "पिता" नहीं बल्कि एक दोस्त, एक सहायक और एक कोमल मन वाले इंसान के रूप में उभर कर सामने आया है। पिता के स्नेह में सचमुच एक गहन आनन्द छिपा है — वह आनन्द जो हमें आत्मबल, विश्वास और स्थिरता प्रदान करता है। यह आनन्द तब और भी मूल्यवान हो जाता है जब हम उस मौन स्नेह को पहचान कर 'धन्यवाद' कह सकें।

इस तेज़ बदलते दौर में अगर कोई रिश्ता अब भी ठहराव और आनंद का स्रोत बना हुआ है, तो वह है — पिता का स्नेह। सचमुच, आज भी और हमेशा — 'पिता के स्नेह में है आनन्द।'

संदर्भ ग्रन्थ :-

1. https://www.drishtiias.com/hindi/blog/family-and-friendship-in-the-digital-age-how-to-keep-these-relationships-strong-amid-the-growing-influence-of-technology
2. https://www.jansatta.com/arts-and-literature/dunia-mere-aage-parenting-values-digital-era-challenges/4005055/
3. https://bharatbeaconn.blogspot.com/2025/05/blog-post_13.html

****